धर्मशास्त्रों में निरूपित श्राद्ध–तत्व ?

स्कन्धपुराण में वर्णन आया है कि एक बार राजा करन्धम ने परम शेव महायोगी महाकाल से पूछा– 'भगवन! मेरे मन में सदा यह संशय बना रहता है कि मनुष्यों द्वारा पितरों के उद्देश्य से जो तर्पण या पिण्डदान आदि किया जाता है तो वह जल–पिण्ड आदि पदार्थ तो यहीं रह जाता है फिर पितरों के पास वे वस्तुएँ कैसे पहुँचती है और कैसे पितरों को तृप्ति होती है। इसे आप बतलाने की कृपा करें'।

इस पर महाकाल ने उन्हे बताया कि 'राजन! पितरों और देवताओं की योनि ही ऐसी है कि वे दूर से कही हुई बातें सुन लेते है, दूर की पूजा भी ग्रहण कर लेते है और दूर से की गयी स्तुति से भी संतुष्ट होते हैं। वे भूत, भविष्य और वर्तमान सब कुछ जानते है और सर्वत्र पहँचते है। पाँचों तन्मात्राएँ, मन, बुद्धि, अहंकार और प्रकृति– इन नौ तत्वों का बना हुआ उनका शरीर होता है। इसके भीतर दसवें तत्व के रूप में साक्षात् भगवान पुरूषोत्तम निवास करते है। इसलिए देवता और पितर गन्ध एवं रस–तत्व को ग्रहण करते है। पवित्रता देखकर उन्हें परम तृप्ति होती है। वे वर देने में समर्थ है। जैसे मनुष्यों का आहार अन्न है, पशुओं का आहार तृण है, वैसे ही पितरों का आहार अन्न का सार–तत्व है। पितरों की शक्तियां अचिन्त्य और ज्ञानगम्य हैं। अतः वे अन्न और जल का सार–तत्व ही ग्रहण करते हैं, शेष जो स्थूल वस्तु है, वह यहीं स्थित रह जाती है'।

विष्णुपुराण का कहना है कि श्रद्धालु को सभी वस्तुओं के अभाव में वन में जाकर अपनी दोनो भुजाओं को उठाकर कह देना चाहिए कि मेरे पास श्राद्ध के योग्य न धन है और न दूसरी वस्तु, अतः मैं अपने पितरों को प्रणाम करता हूँ। वे मेरी भक्ति से ही तृप्ति लाभ करें। स्कन्धपुराण नागरखण्ड के वचन से वहीं कहा गया है कि श्राद्ध की तनिक भी वस्तु व्यर्थ नहीं जातीं, अतएव श्राद्ध अवश्य करना चाहिए'।

महाभाग रूचिकृत श्राद्धसारसर्वस्व सप्तार्चिस्तोत्र (पितृ–स्तुति) :– रूचि बोले– जो सबके द्वारा पूजित, अमूर्त, अत्यन्त तेजस्वी, ध्यानी तथा दिव्यदृष्टिसम्पन्न हैं, उन पितरों को मैं सदा नमस्कार करता हूँ। जो इन्द्र आदि देवताओं, दक्ष, मारीच, सप्तर्षियों तथा दूसरों के भी नेता हैं, कामना की पूर्ति करने वाले उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूँ। जो मनू आदि राजर्षियों, मुनीश्वरों तथा सूर्य और चन्द्रमा के भी नायक हैं, उन समस्त पितरों को मैं जल और समुंद्र में भी नमस्कार करता हूँ। नक्षत्रों, ग्रहों, वायु, अग्नि, आकाश और द्युलोक तथा पृथ्वी के भी जो नेता है, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। जो देवर्षियों के जन्मदाता, समस्त लोकों द्वारा वन्दित तथा सदा अक्षय फल के दाता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। प्रजापति, कश्यप, सोम, वरूण तथा योगेश्वर के रूप में स्थित पितरों को सदा हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। सातों लोकों में स्थित सात पितृगणों को मैं प्रणाम करता हूँ। साथ ही सम्पूर्ण जगत् के पिता सोम को नमस्कार करता हूँ तथा अग्निस्वरूप अन्य पितरों को भी प्रणाम करता हूँ, क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् अग्नि और सोममय है। जो पितर तेज में स्थित हैं, जो ये चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के रूप में दृष्टिगोचर होते है तथा जो जगत्स्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, उन सम्पूर्ण योगी पितरों को मैं एकाग्रचित्त होकर प्रणाम करता हूँ। उन्हें बारम्बार नमस्कार है। वे स्वधाभोजी पितर मुझ पर प्रसन्न हो।

महाभाग रूचि के द्वारा इस प्रकार पितरों की स्तुति करने पर वे अपने मूर्त रूप में रूचि के सामने प्रकट हुए और उन्हें अनेक वरदान प्रदान कर बोले– धर्मज्ञ! जो मनुष्य इस स्तोत्र से भक्तिपूर्वक हमारी स्तुति करेगा, उस पर संतुष्ट होकर हम उसे मनोवांच्छित भोग तथा उत्तम आत्मज्ञान प्रदान करेंगे। यह स्तोत्र हम लोगों की प्रसन्नता बढ़ाने वाला है। जो श्राद्ध में भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके लिये वह श्राद्ध अक्षय फलदायी होगा। श्राद्ध में जो कुछ भी वैगुण्य या न्यूनता रहती हैं, वह इस स्तोत्र–पाठ से पूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह स्तोत्र हमें पुष्टि प्राप्त करने वाला और स्तोत्रकर्ता को परम सुख–संतोष तथा आत्मलाभ देने वाला है।